

सर्प विष - SNAKE POISON

Jangama Visa is a part of the Agada tantra which mainly deals with the poisonous animals. Carakācārya described about the types of the poisonous animals.

सर्पाः क ीटोन्दुरा लूता वृश्चिका गृहगोधिकाः

जलौकामत्स्यमण्डूकाः कणभाः कृकलासकाः

व्यसिंहव्याघ्रगोमायुतरथुनकुलादयः

दंष्ट्रिणो ये विषं तेषां दंष्ट्रोत्थं जगंन महम् ॥

(च.चि. २३/९-१०)

The poison of serpents insects rats spiders scorpion house lizard leeches fishes lizard tiger and fanged animals is known as poisonous animals. The sites and general features of animal poison is already described in the chapters.

There are 2000 species of snakes in the world in and about 216 species in India of which 52 are poisonous. it is

estimated that annually about 2 lakhs people are bitten of whom around 16,000 die. Since the majority of snakes are nonvenomous.

CLASSIFICATION OF SNAKES

" द्विय भौम विभागेन द्विविधाः पन्नगाः स्मृताः।"

In the basic classification of snakes are two types that is

- I. Divya –Mythical
- II. Bhauma- terrestrial living on the earth

DIVYA – MYTHICAL SNAKES

These are radiant just like fire and it is said that they are always roar, cause rain, shine by themselves and made to shine always support and sustain the world then becomes angry convert the world to ashes but by their sight and breath.

BHAUMA SARPA (TERRESTRIAL SNAKES)

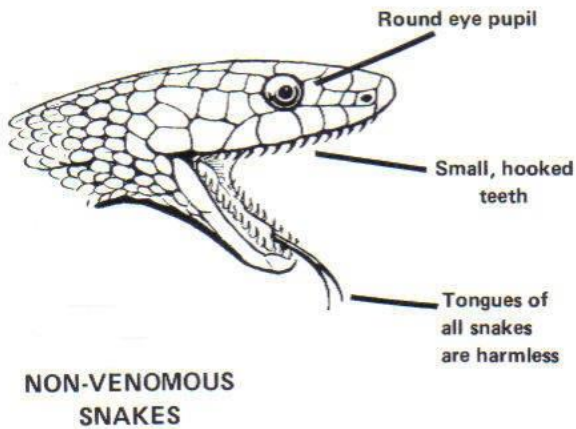
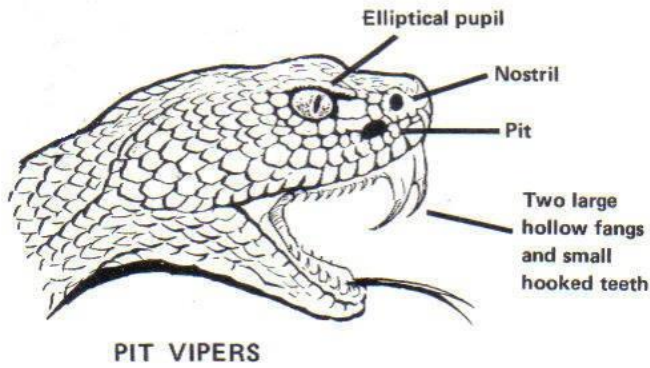
The terrestrial snakes are classified into five types-

1. Darvikara (hooded)
2. Mandali (hoodless)
3. Rajimanta (hoodless and striped)
4. Nirvisa (non-poisonous)
5. Vaikaranja (hybrid)

अशीतिस्त्वेव सर्पाणां भिद्यते पंचधा दुस दवकरा मण्डलिनो
राजिमत्तस्तथैव च निर्विषा बैक रंजाश्च ॥ (सु न ४१९-१०)

The Terrestrial snakes are classified into five types.

A)- Danyikana (hooded) B)Mandal Choodless and painted patches on rings of varied colours on their skin).
C)- Rajimanta (hoodless and striped)Minvisa (non-poisonous) and E) Vakananja Why brid species) These five types g classified to Shakes ane sub sighty types



Difference between poisonous and non-poisonous

FEATURES	POISONOUS	NON-POISONOUS
Belly scales	Large and cover the	small like those on the

	entire breadth of the belly. some harmless snakes also have such belly scales.	beak or moderately large
Head scales	Conspicuous pit between eye and nostril	Large with the exception as outlined under the poison snakes
Fangs	Long and grooved or canalised	Short and solid
Tail	compressed	Not markedly compressed
Habit	Generally nocturnal	Not so
Bite Mark	Two fang marks with or	A no of small teeth marks

	without small marks of another teeth	

Poisonous Snakes-

All the venomous snake may be divided into five categories

1. Crotilidae – Rattlesnake, copperheads, cottonmouth, pit viper.
2. Viperidae - Russell Viper gaboon Viper, Saw Scaled viper, Puff Adder.
3. Elapidae – Consists mainly of cobra, krait, coral snakes.

4. Hydrophidae – Consists of sea snakes
(contains myotoxic venom).

सर्पदंश के भेद-

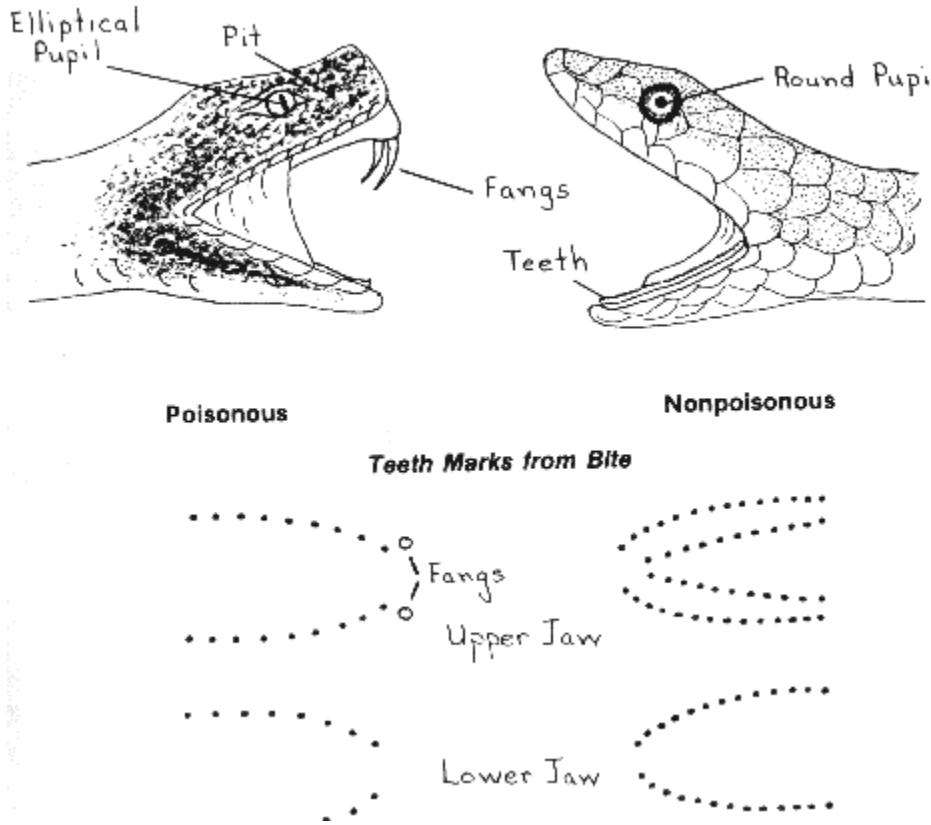
Classification of Snake bite

A) आचार्य सुश्रुत के अनुसार

सर्पितं रदितं चापि तृतीयमथ निर्विषम् ॥ सर्पांगाभिहतं केचिदिच्छन्ति
खलु तद्विदः ॥

आचार्य सुश्रुत ने दंश के तीन भेद बतलाये हैं

1. सर्पित,
2. रदित
3. निर्विष



B) आचार्य वृद्धवाग्भट के अनुसार

आचार्य वृद्धवाग्भट ने दंश के पाँच भेद बतलाये हैं

1. तुण्डाहत
2. व्यालीढ
3. व्यालुप्त
4. दष्टक

5. दंष्ट्रानिपीडित

1. तुण्डाहत- यह दंश छिछला एवं सतही होता है। इसमें दंश स्थान पर लाला से गीलापन मात्र दीखता है। दंश या दाँत का कोई चिह्न नहीं होता।

2. व्यालीढ- यह दंश भी सतही होता है। दंश स्थान पर एक या दो दाँतों के चिह्न तो होते हैं, परन्तु उनसे रक्त नहीं आता। इसका तात्पर्य यह हुआ कि दंश का रक्त से सम्बन्ध नहीं हो पाता।

वृद्धवाग्भट के उक्त दोनों भेद सुश्रुत के निर्विष के अन्तर्गत आ जाते हैं। सुश्रुत ने निर्विष के निम्न लक्षण बतलाये हैं यदि दंश-स्थान पर शोथ कम हो, रक्त भी कम दूषित हुआ हो और रोगी अपेक्षाकृत स्वस्थ दिखलाई दे तो देश स्थान पर एक या अधिक दाँतों के निशान होने पर भी उसे निर्विष जानना चाहिए।

3. व्यालुप्त- यह दंश प्रथम दो देशों की अपेक्षा कुछ गहरा होता है। इसमें दो दाँतों के चिह्न और रक्त का किंचित् रिसाव पाया जाता है।

4. दष्टक - यह दंश व्यालुप्त की अपेक्षा गम्भीर होता है। इसमें दंशस्थान पर तीन दाँतों के चिह्न तथा मांस के कट जाने के कारण रक्त का अनवरत रिसाव देखने को हैं, जो मिलता है।

5. दंष्ट्रानिपीडित - यह दंश सर्वाधिक गम्भीर होता है। इसमें चार दाँतों के निशान और उनसे अनवरत रक्तस्राव के लक्षण पाये जाते हैं।

:दर्वीकर, मण्डली और राजिमान की पहचान (Physical Appearance of Darvikara, Mandali and Rajimana)

#आचार्य चरक मतेन

दवकरः फणी ज्ञेयो मण्डली मण्डलाफणः । बिन्दुलेखविचित्रांगः पन्नगः
स्यात्तु राजिमान् ॥

(च.चि. 23 /125)

- फणवाले सर्पों को फणी या दवकर कहते हैं।
- जिन सर्पों का फण मण्डलाकार होता है, उन्हें मण्डली कहते हैं।
- जो सर्प बिन्दु-बिन्दु चिह्न वाले होते हैं, वे राजिमान कहलाते हैं।

#आचार्य सुश्रुत के अनुसार

- शिरोभाग (hood) पर रथांग (चक्रम्), लांगल (हल) छत्र, स्वस्तिक, अंकुश के सदृश निशान से युक्त ।
- फणयुक्त
- तेज भागने वाले

लिंगभेद की पहचान (Sex Differences)

- पुरुष सर्प पुरुष सर्पगोल फणवाला, विशाल शरीर वाला, फुफकारते रहने वाला, ऊपर की ओर देखने वाला. मोटे शिरवाला तथा समस्त शरीर एक समान स्थूल दीखने वाला होता है।
- स्त्री सर्प स्त्री सर्प पुरुष सर्प के लक्षणों से विपरीत लक्षणों वाले होते हैं।
- नपुंसक सर्प नपुंसक सर्प डरा डरा-सा रहता है।

सर्पविष का उपचार

(Treatment of Snake Bite)

दर्वीकर साँपों के विष में -

1. सिन्दुवार की जड़, श्वेता और गिरिकर्णिका का पानी में पीसकर अथवा 2. सिन्दुवार की जड़ को सिन्दुवार के ही स्वरस में पीसकर पिलायें
3. कूठ और मधु का नस्य दें
4. दंश - स्थान पर चारटी और नाकुली का लेप करे।

राजिमान साँपों के विष में-

1. चौलाई, गम्भारी, अपामार्ग, अपराजिता, बिजौरा, सिता और लसोढ़े को पानी के साथ पीसकर पिलायें। इसी का नस्य दें और अञ्जन करें।
2. कडुवी तुम्बी, अतीस, कूठ, घर का धुवाँसा, हरेणु, त्रिकटु और तगर का चूर्ण मधु के साथ दें।

मण्डली साँपों के विष में-

1. सुगन्धा, मृद्वीका, श्वेता, गजकर्णिका - सब समभाग; तुलसी पत्र, कैथ, बिल्व और अनारदाना उक्त द्रव्यों का

MODERN TREATMENT-

1. Immobilization- Frequent moving of body parts will increase the blood flow and subsequently will only support rapid spreading of the venom. Therefore, the site of bite should be immobilized.

2. Application of tourniquet etc. - This is done to arrest the spread of venom through the blood stream.

3. Local Measures

- Site of bite should be cleaned with water.
- Incision should be made at the site for suction of blood.

Use of Anti-Dotes-

Antidotes are of two kinds -

1. Specific antidotes and
2. Polyvalent antidotes.

अलर्क विष

(RABBIES POISION)

About the Alark visha there is a there is Explanation in Shushrut Samhita regarding its Sign, Symptoms, and Treatment.

Cause Of Rabies Poison

- Due to the in the Animal like Dog, Wolf, jackal, etc.
- The Vatta gets vitiated by Kapha which takes the shelter of sensory channels and hampers the consciousness due to this dropping of Tail, jaw bones and Shoulders. With copious flow of Saliva from the mouth.
- The Animal in such a state becomes intensely blind and deaf, Sun towards each other at random.
- When such Animal bite in Rage leads to sensory loss and profuse, bleeding with blackish discoloration takes place from the affected part.

Features of Rabies Poison

- 1. LOCAL FEATURES**
- 2. GENERAL FEATURES**
- 3. INCURABLE FEATURES**

Local features

- Itching
- Continuous Pain
- Fever

- Swelling
- Tearing of tissues
- Exudation

General Features

- Immediately loss of sensation at the affected site.
- Profuse bleeding with blackish discoloration and later on leads to chest pain.
- Headache
- Fever
- Rigidity of the body parts.
- Excessive Thirst and fainting.

Incurable FEATURES

- In this stage the affected person initiated the voice and activities of an animal by which he got beaten, slowly person becomes paralyzed with Respect to his activities which intern leads to Death.

Treatment

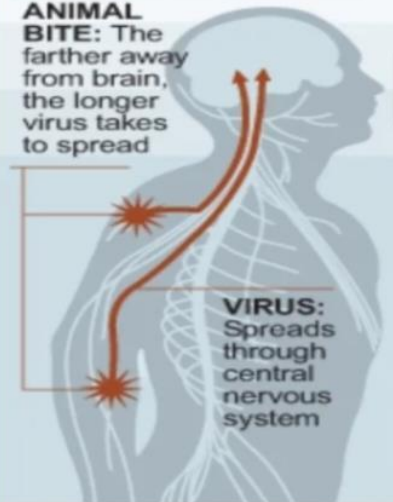
- Prophylaxis method
- Agni Karma
- Propitiatory Bath
- Shodhan Karma

Rabies Symptoms

Rabies

How it spreads

ANIMAL BITE: The farther away from brain, the longer virus takes to spread



Common carriers of rabies

Infected animals: Show no fear for humans; act very agitated



Dog: Another common rabies source

Symptoms in humans

- Fever, depression
- Agitation
- Painful spasms followed by excessive saliva
- Death within a week without vaccine



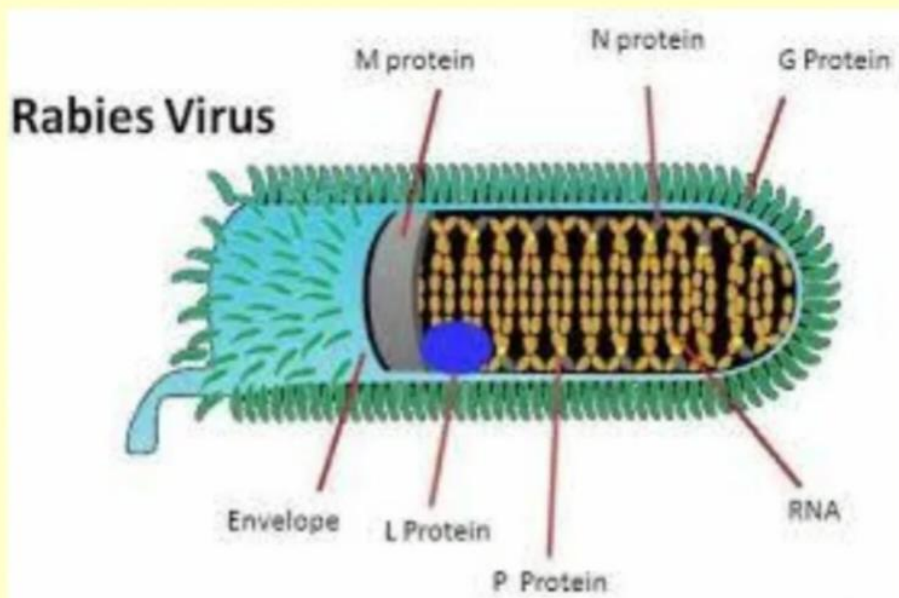
Treatment: Hospitalization, immune globulin injections, anti-rabies vaccine

Foaming at mouth after drinking: Produced by spasms in throat

SOURCE: The World Book Medical Encyclopedia

KRT

Rabies Virus



आयुर्वेदा अनुसार

पर्याय

- जलसंत्रास
- जलत्रास

परिचय

इस पद का प्रयोग सामान्यता कुत्ते के कटने से उत्पन्न विषाक्त के लिए किया जाता है, परंतु व्यापक दृष्टि से हिंसक आक्रमण में रदांको (canines) का व्यवहार करने वाले जितने भी पशु हैं

जैसे:- गीदड़, भेड़िया, कुत्ता, चीता, भालू, आदि।

इन सभी के कटने से उत्पन्न विषाक्त का इसमें समावेश हो जाता है।

आचार्य वृद्धवागभट्ट के अनुसार

शुनः श्लेष्मोल्बणा दोषाः संज्ञां संज्ञावहाश्रिताः ।

मुष्णन्तः कुर्वते क्षोभं धातूनामतिदारुणम् ॥

लालावनन्धबधिरः सर्वतः सोऽभिधावति ।

स्रस्तपुच्छहनुस्कन्धः शिरो दुःखी नताननः ॥

(अ.सं.उ. 46/7)

कफ प्रधान वातादि दोष जब कुत्ते के संज्ञवह स्त्रोतो में आश्रित होकर उसकी संज्ञा को नष्ट करते हुए रस आदि धातुओं में अत्यधिक क्षोभ उत्पन्न करते हैं तो उसमें निम्न लक्षण देखे जाते हैं।
जैसे:- लालस्राव , अंधत्व, बधीरता, उसकी पूँछ हनु कंधा और सिर लटक जाना एवम अत्यधिक व्याकुल एवम दुखी रहना।

लक्षण एवम चिह्न

*आचार्य शुश्रुत के अनुसार

सुप्ता जयते दंशे कृष्णम चातीस्रवत्यसृक

(सु. क. 7/45)

- दंशस्थान पर सुप्तता
- अधिक मात्रा में कृष्णवर्णीय रक्तस्राव

स्थानीय लक्षण (Local Symptoms)

- दंशस्थान में कांडू, चुभन, जैसी पीड़ा, विवर्णता, संज्ञानाश और क्लैद।
- दंशस्थान का फटना, छाले, मासंकुर, तथा पूरे शरीर पर चकते उत्पन्न हो जाना।

सर्वदैहिक लक्षण (Generalized symptoms)

- ज्वर
- भ्रम
- दाह
- लाली

- सूजन
- ग्रंथि तथा आंख का अपेक्षाकृत सिकुड़ जाना

असाध्य लक्षण

- पशु के समान चेष्टा करना
- उसकी छाया पानी में देखना
- जलसंत्रास

अलार्क विष नाशक त्रैप

- तिल गुग्गुल द्रुवा अनारदाना और गुड को पीस कर लेप बनाए।
- लहसुन मिर्च पीपली और त्रिफला को गाय के पित्त में पीसकर।
- लहसुन को सिरके में पीसकर
- प्याज के रस को मधु में मिलाकर
- प्याज नमक मधु पापड़िया नमक और सिरके को पीसकर
- आक का दूध

अलर्क विषनाशक घृत

- जौ उड़द कुल्थी और वृहतपंचमूल के क्वाथ और दूध से सिद्ध घृत।

- जलवेतस के पत्र छाल और मूल के क्वाथ से सिद्ध घृत।

#मुखसेव्य योग

- श्वेत पुनर्नवा और धूतेर के बीज
- तिल तेल आक का दूध और गुड़
- अग्नितुंडी वटी
- धतूरे के बीज और अंकोट की जड़

Scorpion Bite

- Scorpions are born from the putrefied drug of cave etc.
- Cadaver of animals killed by poisoned arrow and also from cadaver of snakes

Classification on the Basis of severity

1. Mild Poison 12
2. Moderate Poison 03
3. Powerful Poison 15

30

Types on the Basis of origin

- मंद विष 12 in numbers origin from putrefied cow dung as mild Poisoning.
- मध्यम विष 12 in numbers origin from woods or bricks has moderate Poison.
- महा विष 15 in numbers origin from sloughed snakes or from other poisonous substances.

Scorpion poison Lakashana

- Burning sensation just like fire.
- Severe pain
- Bluish color
- Pricking and bursting pain at the site
- Fever
- Rigidity of the body
- Loss of perceptions
- Wasting of Muscle
- Sweating and Fainting
- Death occurs

TREATMENT

1. Excrete of pigeon pathya, Tagara and wishuabesaja mixed with juice of bijapura is an Agad antidote best suited for scorpion sting.
2. Lehsuna, Marica, Hingu, Surasu and visuabesaja made into a paste with milky sap of Ark and rolled into kills gives comfort to patients of scorpion sting.
3. He who faints with increased Respiration delirium and severe pain should be treated with the juice of leaves of wartaka.

4. Flower of Karanja, Arjuna, Kutaja, Sirisa, Macerated with whey is an ideal application on the site of sting.

Spider poison

Origin

1st opinion: The sage vashishta got angry by Vishwamitra. Due to ANGER the drops of sweat on the forehead of Vashishta fell on the wet grass and got transformed into numerous spiders.

2nd Opinion: During the burning of khandwa forest, the sparks of fires which originated from the body of asuras became spiders.

3rd Opinion: The vesicles that develop on the body after ingestion of contaminated food are known as Lutas.

Note: ACHARYA VAGHBHTA HAS INCLUDED THE LUTA VISHA IN KEET VISHA SINCE, IT POSSESS THE QUALITIES OF INSECTS.

Types

According to Dosha

- i) वातज
- ii) पित्तज
- iii) श्लेष्मज
- iv) सन्निपातज

According to विषप्रभाव

- i) तीक्ष्ण विषयुक्त: death occurs within 7 days
- ii) मध्यम विषयुक्त : death occurs within 7 to 10 days
- iii) मंद विषयुक्त: Death occurs within 15 days

According to स्वरूप

- i) आग्नेय : 7 in number and born from Sweat
: give rise to पित्तज रोग
- ii) सौम्य : 7 in numbers and born from eggs
: give rise to श्लेष्मज रोग
- iii) वायव्य : 7 in numbers and born from soil and air
: give rise to वातज रोग
- iv) सन्निपातज : 7 in number and born from mixed qualities
: also known as उपदिका
: cause fire like burning sensation

असाध्य लूता विष लक्षण

- i) delusion
- ii) dyspnoea
- iii) Hiccups
- iv) severe pain in head
- v) vomiting
- vi) blue coloration in mouth, lips and teeth
- vii) burning sensation
- viii) Blood color resembling Jambu fruit

ix) eruptions

x) Shivering

#Having all the symptoms, the condition is termed as INCURABLE.

Sites of poisoning in Spider

The various sites are as follows

-breath

-teeth

-excreta

-semen

-saliva

-nails

-menstrual blood

-urine

TREATMENT

I) When there is great increase of dosas, the anti-poisonous therapy should be administered.

II) Purgation should be done by using triphala, trivrit and nilini.

III) During the treatment of spider bite poisoning, only GHRIT should be used for lubrication therapies, like Bundle of hay put on fire.

मुषिका विष

Rat poisoning

Types

There are 18 kinds of rats

- 1) lalana
- 2)Capala
- 3)putra
- 4) hasira
- 5)cikira
- 6)Ajina
- 7) Kashaydanta
- 8) Kulaka
- 9)Kokila
- 10) Kapila
- 11) Asita

- 12) Aruna
- 13) Sabala
- 14) Sweta
- 15) Kapata
- 16) Palita Uduvu
- 17) Cucundaru
- 18) Rasala

Symptoms from Contact of Semen

The part of body which comes in contact with their semen directly or through cloth contaminated by it. There, the blood become vitalitated and pale, small nodules swelling, rashes and pigmented patches appears. Loss of appetite, bleeding, fainting and vomiting etc are the symptoms.

MICE POISON

Poison of mice is VYAVAHI (spreads quickly all over the body) difficult to cure, gets aggravated often.

असाध्य मुषिका विष लक्षण

-fainting

- swelling of body
- discoloration
- loss of hearing
- excessive saturation
- fever

These are the symptoms of uncurable stage.

त्याज्य रोगी

Swelling of urinary bladder, discoloration of lips, body covered with nodules resemblance of rat. Such a patient should be rejected.

TREATMENT

The site of bite by the rat should be burnt either by a stem of a plant, and if not done, there would be a severe pain and development of round muscular growth.

Vomiting should be made by administering the decoction of nilini, sokaya or ankola.

Purgation is administered by kalka form of trivrit, nilini and triphala.

कीट विष

Origin

kitas are born from the decomposed mass of the excretas, urine, and semen, eggs or carcass of snakes.

Types

On the basis of doshas, the insects are given 4 types

i) वायव्य - 18

ii) पित्तज - 24

iii) श्लेष्मज -13

iv) सन्निपातज -12

total 67

The term keeta refer to all living creature, which are small in size but visible. Usually seen in soil, water, building walls, roof, etc.

Few bite with their teeth, some have stings, and some scratches with claws etc.

दंश लक्षण

i) वायव्य - pricking pain

- increasing the intensity at the site of bite

ii) पित्तज - slight exudation

- severe burning sensation

- redness

- swelling resembles ripe fruit of pilu and khajura

iii) श्लेष्मज - mild pain

-swelling resembling ripe udumbar fruit

iv) सन्निपातज - Combined symptoms are seen

HONEY BEE POISON

6 TYPES

- 1) katarik
- 2) kasnaka
- 3) Pingalika
- 4) Madhulika
- 5) kasayi
- 6) sthalika

Symptoms

- swelling
- burning sensation
- Eruptions of pustules

House Lizard

- i) perspiration
- ii) swelling with pricking pain
- iii) Burning sensation
- iv) Exudation from site
- v) pain in head
- vi) Development of tumour

Centipede

Types : 8

- 1) Parusa
- 2) Krsna
- 3) kitra
- 4) Kapalika
- 5) Pitaka
- 6) Rakta
- 7) Sweta
- 8) Agni prabha

Symptoms

- yellowish discoloration
- sweat
- redness and swelling
- resembles the flower of atari
- eruptions and giddiness

Treatments

An agada composed of Kumkuman, tagaram, shigru, padmakam, and ranjanidravyam and are pasted in the water, and process is curative in the bite of satpadi

Frog Poison

types

- 1) krsna
- 2) kushaka
- 3) harita
- 4) rakta
- 5) yavarnabha

6) bhrkuti

7) kotika

Symptoms

-itching sensation

-out flow of yellowish colored blood

-burning sensation

Fish Symptoms

-painful

-burning sensation

Ants poison

types

i) Stimula shirisa

ii) Samvahika

iii) Brahmanika

iv) Angulika

v) kapilika

vi) ciravarneti

Symptoms

-swelling

-burning sensation

-Inflammation at the site

Mosquitoes

types

i) Samudra

ii) Parimandala

iii) Hastimaska

iv) Krsna

v) Parvatiya

Symptoms

-Severe itching

-Swelling

-Fatal